भूमिका

आत्मकथा हिंदी साहित्य की नवीनतम एवं लोकप्रिय विधा है । यह अन्य विधाओं से अलग हटकर अपनी पहचान सुनिश्चित करती है। इसमें जिए हुए जीवन का भोगे हुए क्षणों का, झेले हुए सुख-दुखों का सच्चा लेखा–जोखा आत्मकथा लेखक,अपने समग्र जीवन के पुनः रीक्षण के रूप में प्रस्तुत करता है। यह विधा आत्मकथाकारों के जीवन का सचित्र एल्बम होता है जिसे वह पाठक–वर्ग के सामने बेझिझक खोलता है वस्तुतः इसमें लेखक के जीवन में घटी घटनाओं ,उतार–चढ़ाव ,संघर्षों ,घात-प्रतिघातों का जीवंत चित्र होता है। आत्मकथाकार अपनी आत्म-स्मृतियों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करके आत्मकथा को प्रबंधात्मक रूप प्रदान करता है। इसमें देशकाल ,वातावरण अपने पूरे प्रभाव के साथ सक्रिय रहता है। आत्मकथा सृजित करना तलवार की धार पर चलने के समान है क्योंकि इसकी सबसे बड़ी शर्त है 'सचबयानी'। जीवन में घटी घटनाओं का ईमानदारी के साथ बिना दुराव-छिपाव के पाठकों के सामने प्रस्तुत करना आत्मकथा की सबसे बड़ी चुनौती है। जो इस चुनौती को स्वीकार करता हैवही आत्मकथा का सृजन कर पाता है। आत्मकथा में 'जगबीती के बहाने आपबीती' कही जाती है। इसमें दूसरों के द्वारा जीवन–सत्यों का उद्घाटन न होकर स्वयं द्वारा अपने जिए-भोगे यथार्थ को व्यक्त किया जाता है।

यूँ तो स्त्री-पुरुष दोनों के द्वारा आत्मकथाएँ लिखी गई हैं लेकिन समाज के प्रति जो प्रतिरोधी स्वर स्त्री आत्मकथाओं में मिलता है वह पुरुष आत्मकथा में दुर्लभ है। इसके पीछे मुख्य वजह यह है कि सदियों से स्त्रियों ने जो दुख-दर्द और अपमान झेला है उसकी अभिव्यक्ति के प्रसंग में बगावती तेवर का आना स्वाभाविक है। पितृसत्ता के भय से अपनी आवाज बंद रखने वाली स्त्रियाँ थोड़ा सा स्पेस पाने पर बड़े आक्रामक ढंग से अपनी बात कहती हैं। अपने जिये हुए और भोगे हुए को अभिव्यक्त करने के लिए स्त्रियों ने आत्मकथा जैसी विधा को चुना ।

वर्तमान समय में दर्जन भर से ज्यादा स्त्री आत्मकथाएँ प्रकाश में आ चुकी हैं जिनमें 'अन्या से अनन्या' (प्रभा खेतान), 'एक कहानी यह भी' (मन्नू भण्डारी), 'दोहरा अभिशाप' (कौशल्य बैसंत्री), 'शिकंजे का दर्द' (सुशीला टाकभौरे), 'कस्तूरी कुंडल बसै', 'गुड़िया भीतर गुड़िया' (मैत्रेयी पुष्पा), 'लगता नहीं है दिल मेरा' (कृष्णा अग्निहोत्री) आदि आत्मकथाओं का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। इन आत्मकथाओं कि चर्चा-परिचर्चा अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में होती रहती है तथा इन पर पर्याप्त मात्र में शोध-कार्य भी किया जा रहा है।

चंद्रकिरण सौनरेक्सा कि आत्मकथा 'पिंजरे कि मैना' पर किसी भी आलोचक एवं समीक्षक का ध्यान उस तरह से नहीं गया जिस तरह से अन्य आत्मकथाओं पर ,अगर गया भी है तो मात्र सूचनात्मक रूप से । चन्द्रकिरण सौनरेक्सा स्वतंत्रता-पूर्व कि उन कथा लेखिकाओं में गिनी जाती हैं जिन्होंने अपने संपूर्ण कथा साहित्य में 'स्त्री-जीवन'कि त्रासदी को व्यक्त किया। इनकी प्रशंसा में विष्णु प्रभाकर जी कहते हैं- "महादेवी जी को जो प्रसिद्धि कविता के क्षेत्र में प्राप्त हुई है वही चंद्रकिरण ने कहानी के क्षेत्र में पाई ।" इतनी प्रसिद्धि होने के बावजूद भी इन्हें गुमनामी के अंधेरे में खोना पड़ा। इसी वजह से मुझे लगा कि इनकी आत्मकथा पर शोध-कार्य करना न सिर्फ मेरे लिए बल्कि पूरे साहित्य जगत के लिए काफी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इसीलिए मैंने इसे अपने शोध का विषय बनाया।

जहाँ तक विषय कि मौलिकता का सवाल है तो मेरी जानकारी में अभी तक इस विषय को लेकर किसी प्रकार का शोध-कार्य नहीं किया गया है। यदि कहीं इस आत्मकथा का जिक्र हुआ भी है तो मात्र औपचारिकता बस।

विषय की गंभीरता एवं समयावधि कम होने के कारण मैंने लघु शोध-प्रबंध को 3 अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में स्त्री-मुक्ति की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए

स्त्री-मुक्ति के इतिहास को दिखाया गया है जिसमें पाश्चात्य एवं भारतीय संदर्भ को लेते हुए बात को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है।

दूसरे अध्याय में मैंने स्त्री-मुक्ति के सवालों को उठाते हुये उसकी विस्तृत विवेचना की है। इसके साथ ही साथ हिंदी स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री-छवि को दिखाने का प्रयास किया गया है।

तीसरे अध्याय में मैंने चंद्रकिरण सौनरेक्सा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को दिखाने के साथ ही, पिंजरे की मैना' आत्मकथा में उनके पारिवारिक-संघर्ष एवं प्रतिरोध का विश्लेषण किया है। अंत में विषय के मूल्यांकन स्वरूप उपसंहार दिया गया है।

इस शोध में मुख्य रूप से विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध – पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के पूरा होने में कई लोगों का विशेष योगदान रहा है। मैं अपने शोध-निर्देशक प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक, कहानीकार एवं शिक्षाविद गुरुवर प्रो. सूरज पालीवाल के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे विषय चयन से लेकर लघु शोध-प्रबंध पूर्ण होने तक अपने ढंग से कार्य करने की पूरी आजादी दी। उनके कुशल मार्गदर्शन एवं लोकतान्त्रिक व्यवहार से मुझे निर्द्वंद्व रूप से शोध-कार्य पूर्ण करने में काफी मदद मिली है। मैं साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर कृष्ण कुमार सिंह के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर उचित मार्ग-दर्शन किया। साथ ही साहित्य विभाग के अन्य शिक्षकों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्ग-दर्शन किया।

इसके अतरिक्त मैं अपने परमपूज्य माता-पिता के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके आशीर्वाद और स्नेह से इस शोध-कार्य को सम्पन्न करने में सक्षम हो पा रहा हूँ। साथ ही डॉ. अभिषेक दुबे का आभार प्रकट करता हूँ जिनकी वजह से मुझे प्रस्तुत आत्मकथा उपलब्ध हो पाई। इसके अलावा ममता, प्रियंका, कृष्ण कुमार मिश्र, सूर्य प्रकाश शुक्ल का भी आभार प्रकट

करता हूँ जिनका सहयोग बराबर मिलता रहा। अंत में अपने अग्रज एवं मित्रों का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय के साथ-साथ इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त अन्य कई और नाम भी जाने-अनजाने में छूट जा रहे हैं,उनके प्रति भी बहुत आभार.....

(आलोक कुमार शुक्ल)